Q. मूल्य निर्धारण में रेखाचित्र की सहायता से समय तत्व की भूमिका स्पष्ट करें।

Ans.

मूल्य निर्धारण में समय तत्व का विश्लेषण सर्वप्रथम Prof. Alfred Marshall ने अपनी विश्व प्रसिद्ध क्रान्तिकारी पुस्तक Principles of Economics में 1890 ई० में किया।

Marshall ने समय तत्व को ध्यान में रखकर चार तरह से मूल्य का अध्ययन किया, जो निम्नलिखित है।

1. Market price.
2. Short period Normal price.
3. Long period Normal price.
4. Secular price.

1. Market price :- Rate of production and technique of production both are fixed. (इसमें उत्पादन की दर तथा उत्पादन की तकनीक दोनों स्थिर होती है)

2. Short period Normal price :- Rate of production is variable but technique of production is fixed. (इसमें उत्पादन की दर परिवर्तनशील किन्तु उत्पादन की तकनीक स्थिर रहती है।

3. ~~Long~~ period Normal price :→ Both Rate of production and technique of production are variable. (इसमें उत्पादन की दर और उत्पादन की तकनीक दोनों परिवर्तनशील होती है)

4. Secular price :- इसमें जनसंख्या, रूचि, फैशन, आय आदि उत्पादन तकनीक, वैज्ञानिक आविष्कार आदि तत्वों को ध्यान में रखकर जो मूल्य निर्धारण किया जाता है उसे Marshall ने secular price कहा है

Marshall के बाद Stigler ने अपनी पुस्तक Theory of Price में समय के दृष्टिकोण से मूल्य का अध्ययन तीन भागों में बाँटकर किया, चौथे भाग Secular Price के बारे में कहा कि यह एक ऐतिहासिक अवधारणा है। (It is only of historical necessity) वास्तविक जीवन में अतिदीर्घकालीन कभी नहीं आता। 1990 में 2090 के मूल्य का विश्लेषण कोई अर्थ नहीं रखता।

बाद के कुछ अर्थशास्त्रियों ने Short Period Normal Price and Long Period Normal Price को मिला कर एक ही मूल्य Normal Price के नाम से अध्ययन करते हुए मूल्य को सिर्फ दो भागों में बाँटा है, किन्तु अधिकांश लोगों ने इसे तीन भागों में बाँट कर अध्ययन किया है।

(1) Market Price :- बाजार मूल्य में उत्पादन की दर और उत्पादन की तकनीक दोनों स्थिर रहती है। इसलिए पूर्ति पक्ष स्थिर रहता है। Stigler ने ठीक ही कहा है कि Market Price is that Price in which the supply of the Commodity is fixed. बाजार मूल्य वह मूल्य है जिसमें पूर्ति पक्ष स्थिर रहता है, अर्थात मूल्य में परिवर्तन सिर्फ माँग में परिवर्तन के अनुरूप ही होता है। माँग में जितनी वृद्धि होती है मूल्य उसी अनुपात में बढ़ जाता है तथा माँग में जितनी कमी होती है, मूल्य उसी अनुपात में घट जाता है। उत्पादक को इतना कम समय मिलता है कि माँग में परिवर्तन के अनुरूप न तो वह पूर्ति को बढ़ा सकता है और न घटा सकता है।

Stonier and Hague ने बाजार मूल्य को परिभाषित करते हुए अपनी पुस्तक "A Text Book of Economic Theory" में देहाती मछुआ बाजार (village fish market) का उदाहरण दिया है। देहाती हाट तीन-चार घंटे की होती है, सुबह से मल्लाह दो तीन बजे तक मछली मारता है और इसके बाद हाट में जाकर बे

अब यदि लेखक में सम्मेलन हो रहा है, जिसमें सभी मछली रखने वाले हों तो उस दिन एकाएक मछली की माँग बढ़ जाती। इसके अनुरूप पूर्ति नहीं बढ़ायी जा सकती क्योंकि जबतक मल्लाह नदी से मछली मारकर लायेगा तबतक हाट उठ जायेगी। यदि आस पास में हैजा फैल जाने के कारण मछली की माँग घट जाये तो उसी अनुपात में उसका मूल्य घट जायेगा, क्योंकि मछली एक नाशवान वस्तु है। तीन चार घण्टे से अधिक देर रखने पर वह दुर्गन्ध देने लगती है।

इस तरह न तो मछली की पूर्ति बढ़ायी जा सकती है और न घटाई जा सकती है। माँग में जितनी वृद्धि होगी मूल्य उतना ही बढ़ेगा और माँग में जितनी कमी होगी मूल्य उतना ही घटेगा।

इसे एक रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

उपर्युक्त रेखा चित्र-1 में पूर्ति वक्र जो स्थिर रहता है, माँग वक्र DD होने पर संतुलन बिन्दु Q होता है तथा मूल्य OP है QS इस तरह माँग बढ़ने पर मूल्य उसी अनुपात में बढ़कर OP_1 हो जाता है तथा घटने पर उसी अनुपात में घटकर OP_2 हो जाता है

supply
101 बार

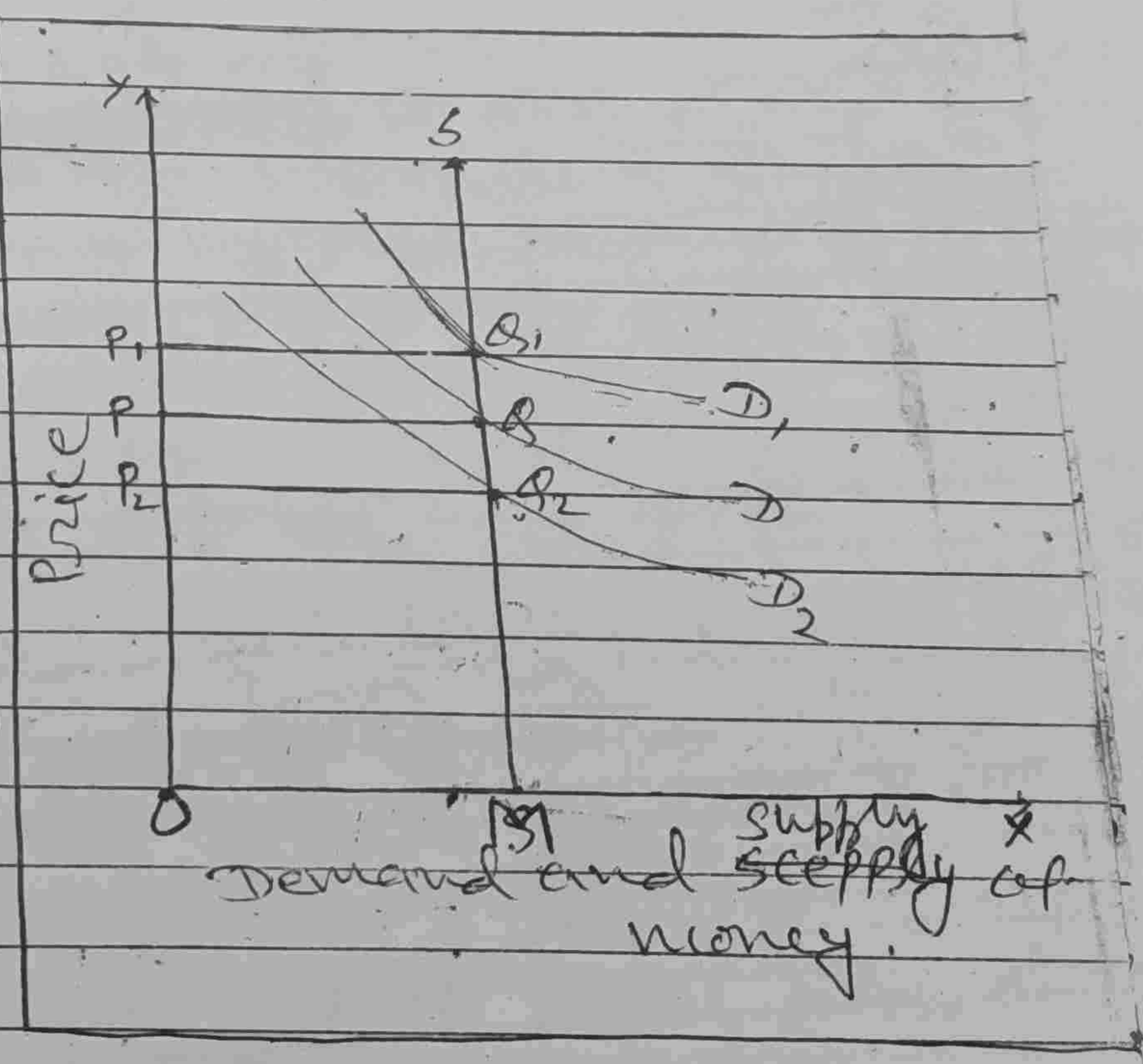

2. Short Period Normal Price :-

अल्पकालीन सामान्य मूल्य अल्पकाल में प्रचलित होता है बाजार काल की तुलना में

अल्पकालीन की अवधि अधिक होती है। अत: इस अवधि में पूर्ति में परिवर्तन किया जा सकता है, लेकिन वर्तमान साधनों द्वारा। इस अवधि में उत्पादन के लिए साधन जैसे मशीन, मकान आदि में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। अत: ऐसी अवस्था में माँग में वृद्धि होने से भी कुछ वृद्धि होती है तथा माँग में कमी होने से पूर्ति में भी कुछ कमी होती है। लेकिन माँग एवं पूर्ति का पूर्ण का पूर्ण समन्वय नहीं किया जा सकता। इस प्रकार इस अवधि में माँग की तो प्रधानता रहती है लेकिन साथ-साथ पूर्ति का भी प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, मछली की माँग में निरन्तर वृद्धि हो तो बाजार मूल्य बढ़ेगा। इसको देखते हुए मछली के उत्पादक मल्लाहों एवं जालों आदि की संख्या बढ़ाकर मछली की पूर्ति बढ़ा देगा, लेकिन मछली की पूर्ति में माँग के अनुपात में पूरी वृद्धि नहीं की जा सकती। क्योंकि नावों की संख्या इस अवधि में बढ़ाई नहीं जा सकती। चूँकि बाजार काल की तुलना में इस अवधि में पूर्ति में थोड़ी वृद्धि की जा सकती है। अत: माँग बढ़ने के फलस्वरूप बढ़ा हुआ बाजार मूल्य इस अवधि में कुछ नीचे चला जाएगा। अल्पकालीन सामान्य मूल्य स्थिर लागत (Fixed cost) के बराबर हो या न हो, परिवर्तनशील लागत (Variable cost) के बराबर अवश्य होती है। ~~असके कम नहीं होता।~~

Determination of Short Period Normal Price :-

निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा अल्पकालीन सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जा सकता है।

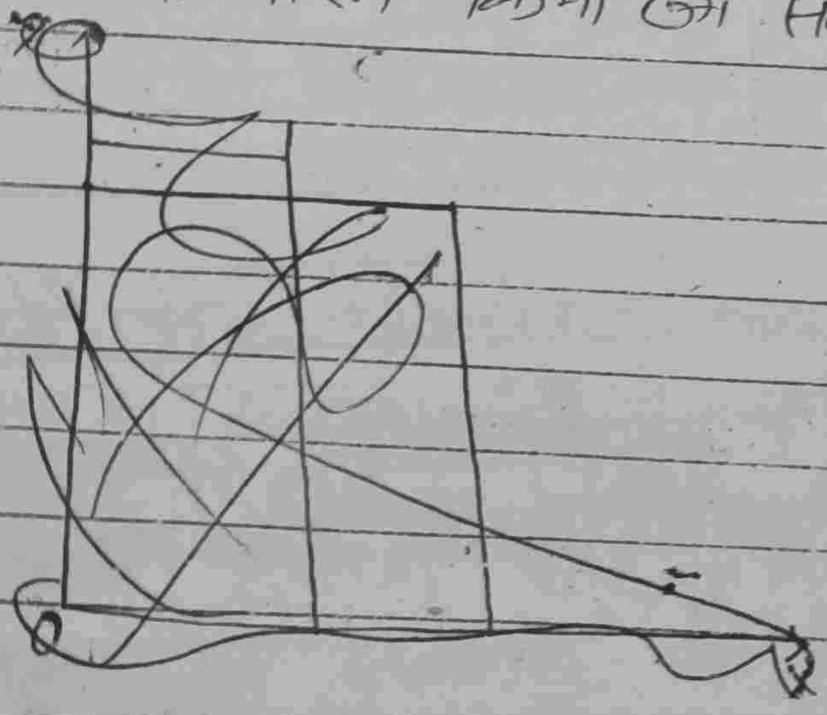

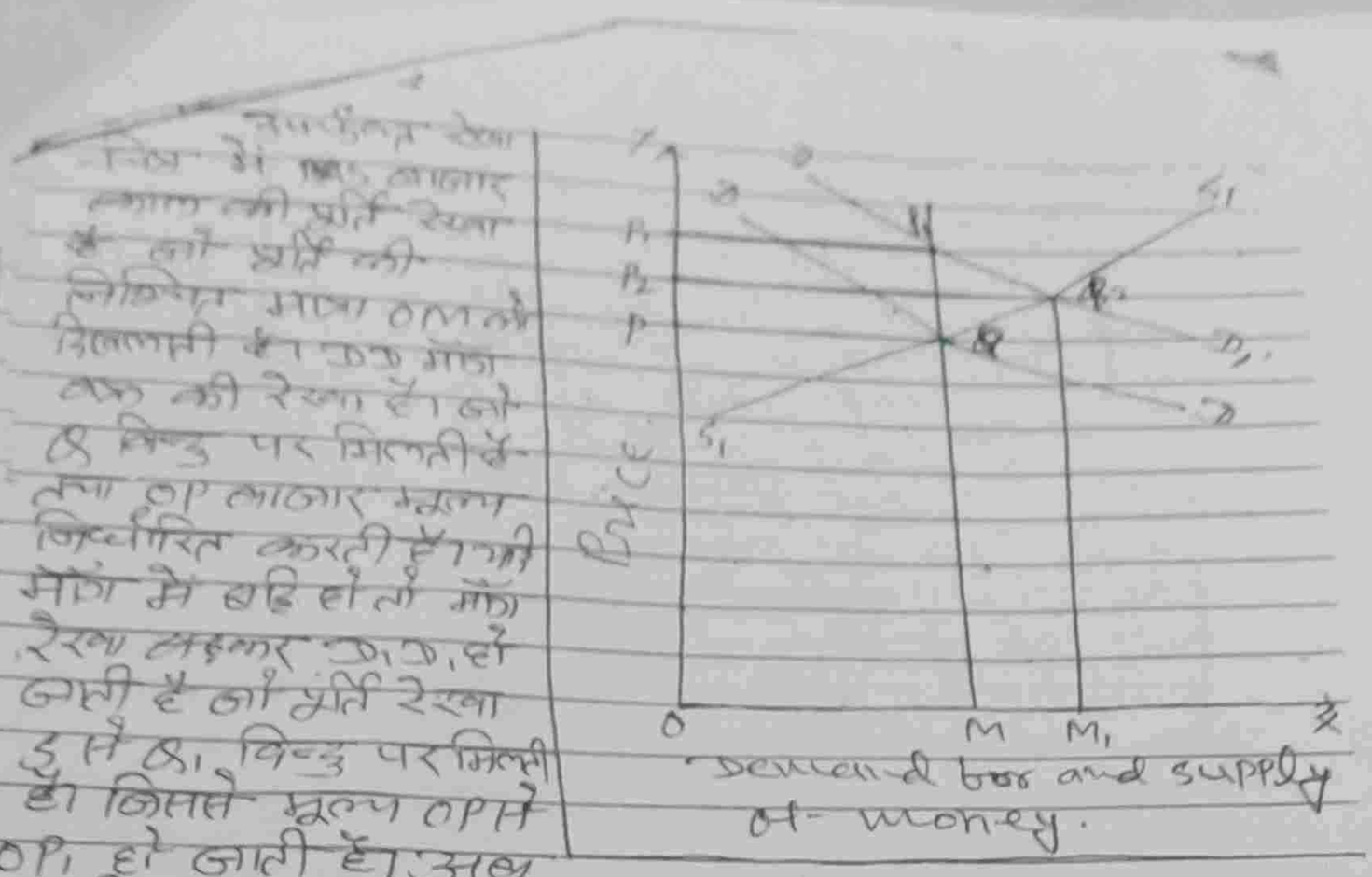

उपर्युक्त रेखा चित्र में ~~MS~~ बाजार काल की पूर्ति रेखा है जो पूर्ति की निश्चित मात्रा OM को दिखाती है DD माँग वक्र की रेखा है जो Q बिन्दु पर मिलती है तथा OP बाजार मूल्य निर्धारित करती है। यदि माँग में वृद्धि हो तो माँग रेखा बढ़कर D_1D_1 हो जाती है जो पूर्ति रेखा S से Q_1 बिन्दु पर मिलती है जिससे मूल्य OP से OP_1 हो जाती है। अब

Demand for and supply of money.

चूँकि बाजार मूल्य में वृद्धि हुई है, अतः अल्पकाल में पूर्ति में वृद्धि होगी, जिसे S_1S_1 रेखा से दिखलाया गया है स्पष्ट होता है कि बाजार मूल्य की रेखा MS से अल्पकालीन पूर्ति की रेखा S_1S_1 तिरछी है क्योंकि यह बढ़ी हुई पूर्ति को दर्शाती है। उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि अल्पकाल में पूर्ति OM से बढ़कर OM_1 हो गई है लेकिन पूर्ति के उस अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है जिस अनुपात में माँग बढ़ रही है। फलस्वरूप अल्पकालीन पूर्ति की रेखा D_1D_1 से Q_2 बिंदु पर मिलती है और OP_2 से अल्पकालीन सामान्य मूल्य निर्धारित होता है यह अल्पकालीन सामान्य मूल्य OP_2 प्रारम्भिक बाजार मूल्य OP_1 से कम है क्योंकि अल्पकाल में वस्तु की पूर्ति OM से बढ़कर OM_1 हो गई है।

(3) <u>Long Period Normal Price</u> :- दीर्घकालीन सामान्य मूल्य प्रचलित मूल्य होता है। दीर्घकाल में समय की अवधि इतनी लम्बी और पर्याप्त होती है कि

उत्पत्ति के स्थिर साधनों जैसे- मशीन म... और औजार आदि में भी परिवर्तन लाकर माँग के अनुसार पूर्ति में पूर्ण समन्वय (Full Adjustment) लाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, लम्बी अवधि में यदि मछली की माँग बढ़े तो केवल मल्लाहों, जालों की संख्या में ही नहीं वरन् नावों की संख्या में भी वृद्धि कर मछली की पूर्ति बढ़ाई जा सकती है। अतः दीर्घकालीन सामान्य मूल्य के निर्धारण में माँग की अपेक्षा पूर्ति का अधिक हाथ होता है। दीर्घकालीन सामान्य मूल्य का निर्धारण माँग और पूर्ति के स्थाई संतुलन (Permanent Equilibrium) द्वारा होता है। दीर्घकाल में इतना समय रहता है कि उद्योग में आवश्यकतानुसार नये फर्म प्रवेश कर सकें तथा पुराने फर्म उद्योग को छोड़कर बाहर चले जाएं। दीर्घकालीन सामान्य मूल्य स्थिर एवं परिवर्तनशील लागत दोनों के बराबर होता है।

Determination of Long Period Normal Price :→

निम्नलिखित रेखाचित्र के द्वारा दीर्घकालीन सामान्य मूल्य के निर्धारण को स्पष्ट कर सकते हैं।

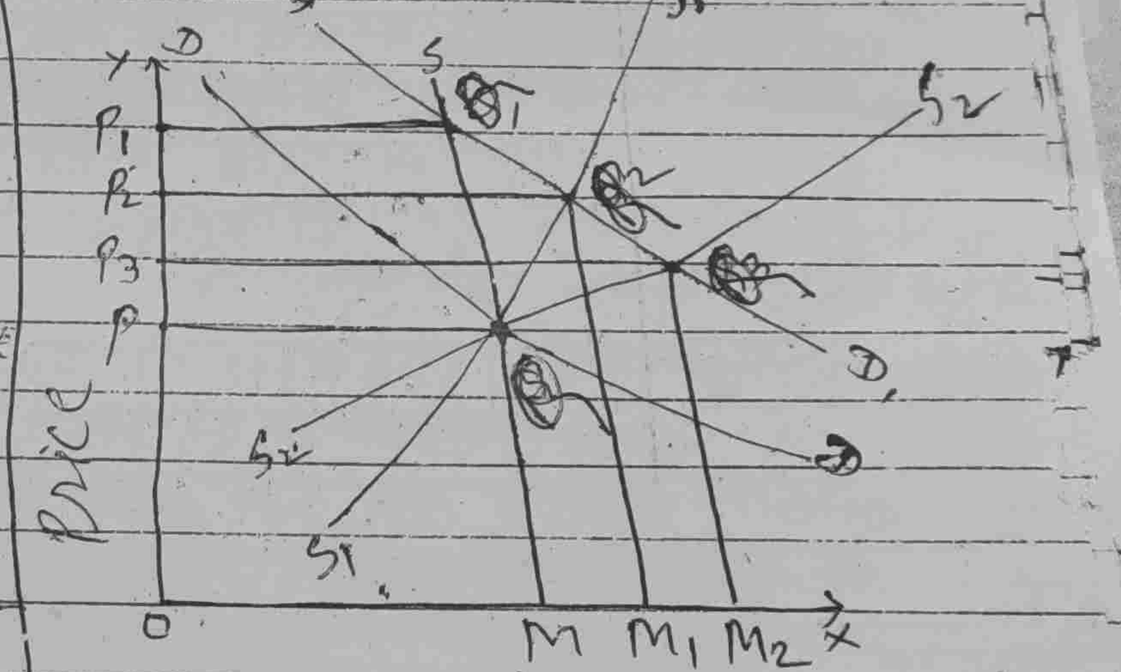

उपर्युक्त रेखाचित्र में MS अति अल्पकाल की पूर्ति की रेखा है जो माँग की रेखा DD से Q बिन्दु पर मिलती है और OP बाजार मूल्य को निर्धारित करता है। माँग बढ़ने से माँग की रेखा जब D_1D_1 हो जाती है तो बाजार मूल्य OP से बढ़कर OP_1 हो जाती है लेकिन अल्पकाल में पूर्ति रेखा S_1 है जो यह

Demand for and supply of money.

दिखलाती है कि पूर्ति OM से बढ़कर OM_1 हो गई तथा

अल्पकालीन मूल्य OP_2 है, बढ़ा हुआ मूल्य OP_1 से कम है। दीर्घकाल में पूर्ति की रेखा S_2S_2 है जो यह दिखलाती है कि दीर्घकाल में पूर्ति में अधिक वृद्धि होती है अर्थात् पूर्ति OM_1 से बढ़कर OM_2 हो जाती है। इसके फलस्वरूप दीर्घकाल की पूर्ति की रेखा S_2S_2 बढ़ी हुई माँग की रेखा D_1D_1 से Q_3 बिन्दु पर मिलती है और OP_3 दीर्घकालीन मूल्य निर्धारित होता है। इससे स्पष्ट होता है कि दीर्घकालीन मूल्य OP_3 अल्पकालीन मूल्य OP_2 से कम है। क्योंकि दीर्घकाल में पूर्ति की मात्रा में थोड़ी और वृद्धि की जायेगी तो माँग के अनुपात में पूर्ति बढ़ जायेगी और दीर्घकालीन OP_3 से घटकर प्रारम्भिक बाजार मूल्य OP के बराबर हो जाएगा।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि समय का अर्थ घड़ी की सुई से नहीं बल्कि वस्तु के Gestation Period अर्थात् उसके उत्पादन में लगे समय से होता है। उदाहरण के लिए, तीन महीने का समय साग के लिए दीर्घकालीन और धान के लिए अल्पकालीन, एक वर्ष का समय धान के लिए दीर्घकालीन और इस्पात के लिए अल्पकालीन, यहाँ यह उल्लेखनीय है कि समय का अर्थ घड़ी की सुई के आधार पर नहीं बल्कि वस्तु के उत्पादन में लगे समय के आधार पर होता है।

यहाँ दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि चाहे बाजार मूल्य हो या चाहे सामान्य मूल्य, मूल्य का निर्धारण उस बिन्दु पर होगा जहाँ माँग और पूर्ति के बीच अन्तरक्रिया होगी।

लेकिन जिस तरह से कपड़ा उसी बिन्दु पर कटता है जहाँ कैंची की दोनों पत्तियाँ आपस में मिलती हैं। ठीक उसी तरह से बाजार मूल्य हो, सामान्य मूल्य, उनका निर्धारण उसी बिन्दु पर होता है जहाँ माँग पूर्ति के बीच अन्तरक्रिया होती है।